A Pinch of Snuff Summary in Hindi

'A Pinch of Snuff' 'Contemporary Indian short stories in English' से ली लघु कथा है । यह हास्यजनक और रोमांचक कथा है जो पाठकों को अंत तक बाँधे रखती है ।

लेखक को अपनी माँ द्वारा नानूकाका के आने का समाचार मिलता है तो वह उन्हें बहाने बनाकर नानूकाका को टालने के लिए कहता है लेकिन माँ कहती है कि नानूकाका अब तक ट्रेन में बैठ गए होंगे और अब उन्हें मना करना अनुचित होगा । वे लेखक को आश्वस्त करती हैं कि नानूकाका 2-3 दिन से ज्यादा नहीं रूकेंगे । उनके आने का कारण पूछने पर लेखक को ज्ञात हुआ कि नानूकाका किसी मंत्री से मिलने आ रहे हैं और उसे लगता है कि वे महीनों तक यहाँ रूकेंगे क्योंकि मंत्री लोगों को कई दिन तक नहीं मिलते । लेखक नया सहायक अधिकारी था और उसे मंत्रियों को ईश्वर से ऊँचा मानना सिखाया गया था ।

लेखक बेमन से नानूकाका को लेने स्टेशन गया । उसने देखा कि नानूकाका का व्यक्तित्व प्रभावशाली था । उनके बाल सफेद थे और मूँछे भी शानदार थी । डेक्कानी ब्राह्मण जैसा उनका . पहनावा था-लाल सिल्क की पगड़ी, घुटने तक लंबी काली कमीज और कंधे पे लिपटा अंगोछा । उन्होंने उतरकर एक टोकरी लेखक को पकड़ाई और बाहर मिलने को कहा । लेखक को एक बिल्ली की आवाज टोकरी से आती सुनाई पड़ी। बिल्ली शायद लेखक के अभी तुरंत एक महिला से हुई टकराव से व्याकुल हो गई थी । नानूकाका बहुत देर बाद स्टेशन से बाहर आए और वे दोनों घर की ओर चल पड़े। रास्ते में नानूकाका ने लेखक से मंत्री के साथ अपनी मीटिंग के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह बस सहायक अधिकारी है और उनकी सहायता नहीं कर सकता । नानूकाका सूंघना की एक चुटकी लेते हैं और चिंतामग्न हो जाते हैं और बीच में जीभ से आवाजें निकालते हैं । -

माँ नानूकाका के आने पर बहुत खुश होती हैं । लेकिन लेखक को अपना बिस्तर नानूकाका को देना पड़ता है । नानूकाका के कहने पर लेखक उन्हें मंत्रीजी के कार्यालय में ले जाता है लेकिन नानूकाका मंत्री से नहीं मिल पाते और उन्हें तीन दिनों बाद का समय दिया जाता है । वे वापस लौटते समय मराठी में गालियाँ देते हैं । जब वे और लेखक वापस घर जाते होते हैं तो एक आदमी लेखक को हाथ हिलाता है और उसकी गाड़ी आगे निकल जाती है । पूछने पर

नानूकाका को पता चलता है कि वह लड़का सोहनलाल रतिराम का बेटा है और लेखक के विभाग में ही कार्यरत है । नानूकाका पहले तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं पर फिर कुछ सोचकर लेखक से पूछते हैं कि क्या उसके पास बंद गले का जोधपुर कोट और पगड़ी है ? जब लेखक और नानूकाका घर पहुँचते हैं तो नानूकाका लेखक को जोधपुर कोट और पगड़ी पहनने को और उसे सोहनलाल के घर चलने को कहते हैं । कपड़े बदलने के बाद वे सोहनलाल के कार्यालय पहुँचते हैं । वहाँ नानूकाका सेक्रेटरी पर धाक जमाने के लिए अपने खास होने का बोध कराते हैं और बड़े-बड़े नेताओं से संपर्क की बात करते हैं। सेक्रेटरी सोहनलाल को बताने अंदर जाता है । नानूकाका ऊँची आवाज में हजरत बरकत अली, जो राजदूत थे उनके बारे में ऐसे बोलते हैं जैसे वे और अली पक्के दोस्त हैं । उध र सोहनलाल अली के बारे में सुनते ही बाहर आते हैं । नानूकाका का अच्छा स्वागत होता है और सोहनलाल और वे बातें करने लगते हैं । कुछ देर बाद सोहनलाल नानूकाका से कहते हैं कि उनका बेटा वित्त विभाग में कार्यरत है पर किसी ने राजदूत के मन में उनके बेटे के प्रति जहर भर दिया ने है । नानूकाका सोहनलाल को आश्वस्त करते हैं कि वे खुद अली से बात करेंगे । नानूकाका फिर सुंघनी सुड़की और मंत्रीजी के बारे में बात करना शुरू किया। सोहनलाल की बातों से नानूकाका को पता चला कि मंत्री और सोहनलाल में दुश्मनी हो गई है क्योंकि मंत्री अपनी पुत्री का विवाह सोहनलाल के बेटे से न कर निन्नौर के राजकुमार से कर रहे थे । कुछ देर बातचीत के बाद नानूकाका और लेखक घर आ गए । अगले दिन नानूकाका और लेखक ने एक बड़ी विदेशी कार की व्यवस्था कर ली । नानूकाका ने खुद एक पंडित जैसे कपड़े पहने और लेखक को ड्राइवर जैसे कपड़े पहनाए और फिर उस कार से चल पड़े मंत्री के कार्यालय की ओर । वहाँ पहुँचने पर जब सेक्रेटरी ने आने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि वे मंत्रीजी को परेशान करने नहीं आए हैं और उन्होंने विजिटर्स बुक मंगवाकर लिखा- निन्नौर के महाराज के राजज्योतिषि और उन्होंने हमारे घर का पता दिया और कार्यालय से निकलते हुए बोले- हमें महाराज सुतकत्ता के महल में ले चलो' । वहाँ से हम घर की ओर चल पड़े। घर पर जैसे ही हमने शाम की चाय खत्म की वैसे ही मंत्रीजी हमारे घर अपनी कार से पधारे । नानूकाका ने द्वार पर जाकर उनका स्वागत किया और घर में ले आए। इस मीटिंग के अगले दिन नानूकाका वापस लौट गए. । लेखक सोचता है कि जब मंत्रीजी को सच्चाई मालूम होगी तो क्या होगा । वह आशा करता है कि इस स्थिति में भी नानूकाका कोई रास्ता निकाल लेंगे । वो चाहता है कि जब इस तरह की परिस्थिति उत्पन्न हो, तो वह घर से बहुत दूर हो । -